*Quest Journals*
*Journal of Research in Humanities and Social Science*
*Volume 3 ~ Issue 11 (November 2015) pp: 89-92*
*ISSN(Online):2321-9467*
www.questjournals.org

**Research Paper**

# कौटिलीय अर्थशास्त्र का काल निर्धारण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

## * डॉ. आलोक कुमार

*एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ*
*Email: alok.dsmru@gmail.com*

प्राचीन भारतीय चिन्तनधारा में राजनीति शास्त्र विषयक चिन्तन को मनीषियों ने राज्यशास्त्र, दण्डनीय, राजधर्म और अर्थशास्त्र आदि नामों से अपने चिन्तन की विषयवस्तु बनाया। कौटिल्य के अर्थशास्त्र की पांडुलिपि को 1909 ई. में डॉ. आर. शामशास्त्री ने अंग्रेजी अनुवाद सहित प्रकाशित कराया।[1] डॉ. शामशास्त्री ने ग्रंथ के विस्तृत उपोद्घात में बड़े पांडित्यपूर्ण प्रमाणों के आधार पर उल्लेख किया है कि आचार्य कौटिल्य चंद्रगुप्त मौर्य के अमात्य थे, अर्थशास्त्र उन्हीं कौटिल्य की ही कृति है एवं अर्थशास्त्र का यही मूल पाठ है।[2]

कौटिल्य अर्थशास्त्र के प्रकाशन के बाद शुरुआत में डॉ. शामशास्त्री की मान्यताओं को विद्वत्जनो ने स्वीकार कर लिया परन्तु बाद में अर्थशास्त्र के लेखक और रचनाकाल को लेकर अनेक भारतीय एवं विदेशी विद्वानों द्वारा प्रश्न उठाये जाने लगे। अर्थशास्त्र के रचनाकाल को लेकर विद्वानों ने जो तिथियाँ सुझायी हैं वे प्राचीन भारत के मौर्यकाल से लेकर गुप्तकाल तक के बीच की हैं। डॉ. शामशास्त्री का मत है कि आधुनिक खोजों से ज्ञात होता है कि चंद्रगुप्त मौर्य का 321 ई.पू. में राज्यारोहरण हुआ जिसमें कौटिल्य या चाणक्य की भूमिका का उल्लेख के कई साक्ष्य उपलब्ध है। ऐसे ही साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना 321 ई.पू. और 300ई. पू. के बीच की।[3] श्री एम.वी. कृष्णाराव ने अर्थशास्त्र की तिथि की मीमांसा करते हुए यह मत व्यक्त किया है कि "अर्थशास्त्र मौर्यकाल से संबंधित है।[4] उनका मुख्य तर्क अशोक और कौटिल्य की नीतियों के बीच संबंध स्थापित करने के प्रयासों पर आधारित हैं, परन्तु रोमिला थापर की मान्यता है कि कृष्णाराव का यह मत अधिक विश्वसनीय नहीं है। वह आगे लिखती है कि एक महत्वपूर्ण तर्क जब कृष्णाराव ने प्रस्तुत किया है वह यह है कि अश्वघोष ने कौटिल्य का उल्लेख किया है और इसका अर्थ है कि उसे अर्थशास्त्र की जानकारी थी। यह दलील कमजोर है क्योंकि उल्लेख कौटिल्य का है अर्थशास्त्र का नही।[5]

डॉ. जे. जौली ने अर्थशास्त्र (लाहौर से प्रकाशित) के 'पंजाब संस्करण' की भूमिका में कई तर्क देकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि अर्थशास्त्र तीसरी सदी ई. में लिखा गया एक जाली ग्रंथ है। उन्होंने अर्थशास्त्र के एक श्लोक "नवं शरावं सलिलस्य पूर्व सुसंस्कृतं दर्भकृतोत्तरीयं । तत्तस्य माभून्नरकं च भच्छेद्यो मर्तृपिण्डस्य कृते न युध्येत्[6] की ओर संकेत करते हुए कहा कि इसका उल्लेख भास के प्रतिज्ञायोगन्धरायण नाटक में है। अर्थशास्त्र में इस श्लोक का प्रयोग उद्धरण के रूप में किया गया है। संभव है इसे कौटिल्य ने भास से ग्रहण किया है। चूँकि भास का समय ईसवी तीसरी सदी का है अतएवं कौटिल्य का समय भी वही रहा होगा।[7] डॉ. जौली की तरह ही डॉ. श्रीराम गोयल ने भी भास और कौटिल्य की तुलनात्मक तिथिक्रमिक स्थिति के आधार पर कौटिल्य को मौर्य युग के बाद का माना है।

परन्तु अर्थशास्त्र के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि अर्थशास्त्र के इस श्लोक से ऊपर एक अन्य श्लोक भी है।[8] इन दोनों श्लोकों का प्रयोग रणभूमि में सेना को उत्साहित करने के लिए किया गया है। दूसरा श्लोक पहले के अभाव में अधूरा रह जाता है, अतः इससे स्पष्ट है कि भास ने इसे कौटिल्य से लिया है। इसके अलावा अर्थशास्त्र में उन सभी आचार्यों का उल्लेख मिलता है जिनसे कौटिल्य ने कुछ भी ग्रहण किया है, यदि कौटिल्य ने इसे भास से लिया होता तो अवश्य ही उनके नाम की चर्चा की होती। इससे भी सिद्ध होता है कि भास कौटिल्य के उत्तराकालीन थे।

कुछ विद्वानों ने कौटिल्य और याज्ञवलक्य के ग्रंथों की समानताओं के आधार पर कौटिल्य को याज्ञवलक्य का समकालीन सिद्ध करने का प्रयास किया है। डॉ. शामशास्त्री ने बड़े ही अच्छे ढंग से उद्धरणों द्वारा दोनों की शैली उनके द्वारा कही हुयी (कमीशन) और न कही हुयी (ऑमिशन) बातों के संबंध में सिद्ध किया है कि याज्ञवलक्य ने कौटिल्य का अनुकरण किया है, इसके अलावा अर्थशास्त्र में वर्णित समाज पूर्व बौद्ध कालीन प्रतीत होता है जबकि स्मृतियों में चित्रित समाज बौद्ध धर्म से संघर्ष की स्थिति में था।[9] डॉ. के.पी. जायसवाल ने 'युक्त' शब्द के आधार पर यह सिद्ध किया है कि याज्ञवलक्य कौटिल्य के बहुत बाद हुए।[10]

डॉ. जौली ने एक तर्क यह भी दिया कि अर्थशास्त्र में मेगस्थनीज व उसके ग्रंथ इंडिका का कहीं उल्लेख नहीं मिलता और न ही मेगस्थनीज ने कौटिल्य व अर्थशास्त्र का कोई विवरण दिया है। इस संबंध में यह कहा जा सकता है कि कौटिल्य अर्थशास्त्र कोई इतिहास ग्रंथ नहीं है जिसमें लोगों का वर्णन मिले बल्कि यह एक सैद्धांतिक ग्रंथ है तथा अर्थशास्त्र का वर्णन किसी देश या काल विशेष का वर्णन नहीं बल्कि सामान्य रूप से किसी देश का शासन प्रबंध कैसा होना चाहिए इसका विवरण है। इसमें स्वयं नरेन्द्र चंद्रगुप्त का नाम भी इसीलिए नहीं मिलता फिर मेगस्थनीज का उल्लेख कैसे मिलता। दूसरे मेगस्थनीज के विवरण में कौटिल्य और अर्थशास्त्र का उल्लेख इसलिए भी नहीं मिल पाता क्योंकि इंडिका के बहुत से अंश अभी भी अप्राप्य हैं अतः संभव है कि लुप्त अंशों में कौटिल्य और अर्थशास्त्र का उल्लेख रहा हो।

डॉ. ए.बी. कीथ अर्थशास्त्र को मौर्यकालीन रचना न मानते हुए कहते हैं कि अर्थशास्त्र का लेखक ब्राह्मण धर्म का पोषक है क्योंकि इसमें वर्णाश्रम धर्म की चर्चा की गई है तथा उसको संरक्षण देने का प्रयास किया गया है और मौर्यकाल में तो श्रमण धर्म का प्रसार था जबकि गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म पुनः विकसित हो रहा था, अतः यह गुप्त युग या उसे कुछ पहले की रचना है। डॉ. कीथ के मत का खण्डन करते हुए श्री चंद्रगुप्त विद्यालंकार ने कहा है कि भारत में सभी धर्म सभी समय में अस्तित्ववान रहे, किसी भी धर्म ने पूर्व की सामाजिक व्यवस्था में सुधार की तो पहल की पर किसी भी धर्म ने पूर्व की सामाजिक व्यवस्था को समाप्त नहीं किया, भले ही उस पर अपना विरोध दर्ज कराया हो। अतः वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था की परंपरा को कौटिल्य कैसे छोड़ता? अतः अर्थशास्त्र को 300ई.पू. की रचना माना जाना चाहिए।[11]

प्रो. के. नाग तथा डॉ. एच.सी. रायचौधरी ने कुछ भौगोलिक शब्दों यथा-हारहूरा, चीन भूमि, कंबु, बाहलीक आदि पर प्रश्न उठाते हुए कहा कि ये शब्दावली बाद के काल की है तथा अर्थशास्त्र के लेखक द्वारा इनका प्रयोग, अर्थशास्त्र को मौर्यकाल के बाद की रचना सिद्ध करता है। इस संबंध में डॉ. रोमिला थापर लिखती है कि भौगोलिक ज्ञान पर आधारित ये तर्क ग्रंथ को बाद की तिथि देने के लिए पर्याप्त प्रमाण नहीं है। संभव है कि नयी जगहों के नाम बाद में लाये गये हों और ग्रंथ को अधिक समयानुकूल बनाने के लिए यह स्वाभाविक था कि संपादक मूल ग्रंथ की परिधि में विस्तार करते।[12]

एक प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. रामशरण शर्मा ने अर्थशास्त्र को लगभग दूसरी शताब्दी ईसवी की कृति माना है। उनका तर्क है कि यह प्रथम शताब्दी तक प्रचलित सूत्र शैली के अनुकरण पर लिखा गया तथा श्लोक बाद में लिखे गये। उन्होंने दूसरे तर्क में अशोक कालीन प्रचलित भाषा प्राकृत और अर्थशास्त्र की भाषा संस्कृत के भेद को आधार बनाया। तीसरे, अर्थशास्त्र में जिन राजनीतिक संगठनों का उल्लेख किया गया है वे अशोक कालीन अभिलेखों में निर्दिष्ट प्रणाली से भिन्न हैं। महामात्र, राजुक, प्रादेशिक, प्रतिवेदक आदि अशोक कालीन विशिष्ट अधिकारियों का उल्लेख अर्थशास्त्र में नहीं है। दूसरी ओर अर्थशास्त्र की कुछ राजनीतिक राजस्विक तथा प्रशासनिक शब्दावली ईसा की पहली ओर दूसरी शताब्दी के शासन अभिलेखों में मिलती है जैसे भोग, प्रणय, विष्टि और परिहार जैसे शब्द दक्षिण व पश्चिम भारत के अभिलेखों में आये हैं और अर्थशास्त्र में भी है। इसी प्रकार 'अमात्य' शक और सातवाहन कालीन पुरालेखों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अधिकारी हैं तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी वैसे ही स्थान पर आसीन हैं। इसलिए किसी भी दशा में अर्थशास्त्र की सामग्री का उपयोग मौर्यकाल के संदर्भ में नहीं किया जा सकता।[13]

डॉ. शर्मा के तर्कों के उत्तर में यह कहा जा सकता है कि सूत्र शैली जब पहले से चलन में थी तो कौटिल्य ने धर्मसूत्रों के साथ-साथ ही यह नीतिशास्त्र लिखा होगा। संभव है कुछ क्षेपक बाद में जुड़ गये हों। चूँकि ग्रंथ अशोक के पहले लिखा गया अतः अशोक के प्रशासनिक सुधारों को इसमें खोजना समीचीन नहीं है। रही बात भाषा की तो आशेक ने अभिलेख आम जनता के लिए प्राकृत भाषा में लिखवाये जबकि अर्थशास्त्र सैद्धांतिक, शास्त्रीय ग्रंथ है जिसमें संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ। संस्कृत में लिखा होने से ग्रंथ बाद का नहीं कहा जा सकता। जहाँ तक बात शक सातवाहन अभिलेखों में प्रयुक्त राजनीतिक शब्दावली की है तो निश्चित ही उन्होंने इसे पूर्ववर्ती नीतिशास्त्र के ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' से प्राप्त किया होगा न कि अभिलेखों में प्रयुक्त शब्दों को अर्थशास्त्र के लेखक ने अपने ग्रंथ में प्रयुक्त किया।

रूसी विद्वान काल्यानोव ने दार्शनिक दृष्टिकोण के आधार पर विश्लेषण करते हुए मत व्यक्त किया है कि अर्थशास्त्र अपने वर्तमान रूप में तीसरी शताब्दी ईसवी की रचना है क्योंकि उत्पादन के जिन साधनों, सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक और राजनीतिक व्यवसायों का वर्णन यह ग्रंथ करता हैं, आमतौर पर यह स्थिति गुलाम समाज के पतन और सामंतवाद के उदय के साथ जोड़ी जाती है। इस पर रोमिला थापर का कहना है कि काल्यानोव के तर्क में समाज के परिवर्तनों को आवश्यकता से अधिक सरल बनाने की प्रवृत्ति है दूसरे मेगस्थनीज के वर्णन पर पूरा विश्वास नहीं किया जा सकता।[14]

डॉ. एस.आर. गोयल ने अर्थशास्त्र के रचनाकाल के सन्दर्भ में बाह्य एवं अंतः साक्ष्यों के विस्तृत विवेचन के बाद यह मत व्यक्त किया कि अर्थशास्त्र में मौर्योत्तर कालीन सामग्री इतनी अधिक है कि उसकी व्याख्या प्रक्षिप्तांक्षों की अवधारणा से नहीं की जा सकती। उनके अनुसार यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि कौटिलीय अर्थशास्त्र का उल्लेख किसी प्राक्-गुप्तकालीन ग्रंथ में नहीं मिलता। अश्वघोष ने बुद्धचरित (लगभग 100 ई.) में लिखा है कि शुक्र और बृहस्पति ने उस राजशाखा की रचना की जो उनके पूर्वज भृगु और अंगिरस भी नहीं कर पाये। इसी प्रकार वात्स्यायन ने कामसूत्र (लगभग 300ई.) में बृहस्पति के अर्थशास्त्र की चर्चा तो की है परन्तु कौटिलीय अर्थशास्त्र से अपरिचित था। दूसरे अर्थशास्त्र में जिस राज-व्यवस्था की झलक मिलती है वह तीसरी सदी ईसवी. की है। अर्थशास्त्र में राजशब्दोपजीवीं संघों का उल्लेख मिलता है जिनमें लिच्छिवियों, मद्रकों एवं प्राज्जूणकों की चर्चा है इनका अस्तित्व पाँचवी शताब्दी ई.पू. में समाप्त हो चुका था तथा पुनः इनकी चर्चा प्रयाग प्रशस्ति में मिलती है अतः इस ग्रंथ की रचना तीसरी सदी के अंतिम चरण में हुयी होगी।

डॉ. गोयल ने कई उन्हीं तर्कों को दोहराया है जिनका खण्डन ऊपर किया जा चुका है। अर्थशास्त्र के उल्लिखित गणतंत्र बुद्ध युग तथा मौर्यकाल के प्रारंभ में अस्तित्ववान थे इसको कई विद्वान स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार अर्थशास्त्र के रचनाकाल को लेकर भिन्न-भिन्न विद्वावों के विश्लेषण का अनुशीलन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि अर्थशास्त्र का अधिकांश मौर्ययुगीन रचना है। मेगस्थनीज और अर्थशास्त्र के वर्णनों में भी कई समानतायें डॉ. ए.एस. अल्तेकर ने रेखांकित की है।[15] हाँ कुछ वाक्य या अध्याय परवर्ती काल में सम्मिलित हो गये हों इससे इंकार नहीं किया जा सकता।

## सन्दर्भ


1. वाचसपति गैरोला, कौटिलीय अर्थशास्त्रम्, वाराणसी, 1975 भूमिका पृ.-68
2. वही, पृ.-68
3. आर. शामशास्त्री, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, भूमिका
4. एम.वी. कृष्ण राव, अर्थशास्त्र ऑफ़ कौटिल्य, मैसूर, 1983, पृ.6-10
5. रोमिला थापर, अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, परिशिष्ट, पृ.-218
6. कौटिलीय अर्थशास्त्र, 10/3/14, पृ.-647
7. जे. जॉली, द अर्थशास्त्र ऑफ़ कौटिल्य, भूमिका, पृ.17
8. यान् यज्ञ संधैस्तपसा च विप्राः स्वगैषिणः पात्रचयैश्च यान्ति। क्षणेन तामप्यतियांति शूराः प्राणान्सुयुद्धेषु परित्यजन्तः ।। कौटिलीय अर्थशास्त्र 10/3/13, पृ.-46
9. आर. शामशास्त्री, अर्थशास्त्र आफ कौटिल्य, प्राक्कथन, पृ.-15-17
10. के.पी. जयसवाल, हिंदू पोलिटी, कलकत्ता, 1930, भाग-1, पृ.383-84
11. चंद्रगुप्त विद्यालंकार, भारतीय इतिहास की रूपरेखा, पृ.-547
12. रोमिला थापर पूर्वोक्त ग्रंथ, परिशिष्ट-1 पृ.-219
13. आर.एस. शर्मा, आस्पेक्ट ऑफ़ पॉलिटिकल आईडियाज एंड इंस्टीट्यूसंस इन एंशियेंट इंडिया, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली, 1959. पृ.34-35
14. रोमिला थापर, पूर्वोक्त ग्रंथ, पृ.-223
15. प्रो. अ.स. अल्तेकर, प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, लीडर प्रेस इलाहाबाद, 1982 पृ.-11